तोड़ती पत्थर

वह तोड़ती पत्थर;
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर -
वह तोड़ती पत्थर ·
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार:-
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार ।

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,
रुई-ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गई,
प्राय: हुई दुपहर :-
वह तोड़ती पत्थर ।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,

विद्धांग--बद्ध-कोदण्ड मुष्टि–खर-रुधिर-स्राव,
रावण-प्रहार-दुर्वार विकल-वानर-दल-बल,–
मूर्च्छित-सुग्रीवांगद-भीषण गवाक्ष-गंय-नल,–
वारित-सौमित्र-भल्लपति–अगणित-मल्ल-रोध,–
गर्जित-प्रलयाब्धि-क्षुब्ध-हनुमत्-केवल-प्रबोध,
उदगीरित-वह्नि-भीम-पर्वत-कपि-चतु:प्रहर,–
जानकी-भीरु-उर-आशा-भर,–रावण सम्वर ।
लौटे युग दल । राक्षस-पद-तल पृथ्वी टलमल,
बिंध महोल्लास से बार-बार आकाश विकल ।
वानर-वाहिनी खिन्न, लख निज-पति-चरण-चिह्न
चल रही शिविर की ओर स्थविर-दल ज्यों विभिन्न ।
प्रशमित है वातावरण, नमित-मुख सान्ध्य कमल
लक्ष्मण चिन्ता-पल, पीछे वानर-वीर सकल;
रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटि-बन्ध स्रस्त–तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार;
चमकती दूर ताराएँ ज्यों हों कहीं पार ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –
   पथ, पेड़, दिवा, भू, पत्थर, गर्द, सुघर
2. 'देखा मुझे उस दृष्टि से' – यहाँ 'दृष्टि' संज्ञा है या विशेषण ?
3. निम्नलिखित शब्दों से विशेष्य-विशेषण अलग करें –
   श्याम तन, नत नयन, गुरु हथौड़ा, सहज सितार
4. कविता से सर्वनाम पदों को चुनकर लिखें ।
5. 'एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर' – यहाँ 'सुघर' क्या है ?
6. कविता से अनुप्रास, रूपक और उपमा अलंकारों के उदाहरण चुन कर लिखें ।
7. यह कविता एक प्रगीत है । गीत और प्रगीत में क्या अंतर है । यह अपने शिक्षक से मालूम करें ।

शब्द निधि

पथ : रास्ता
श्याम तन : साँवला शरीर
नत नयन : झुकी आँखें

कर्म-रत-मन	:	काम में लीन मन
गुरु	:	बड़ा
तरु मालिका	:	पेड़ों की पंक्ति
अट्टालिका	:	ऊँचा बहुमंजिला भवन
प्राकार	:	चहारदीवारी, परकोटा
दिवा	:	दिन
भू	:	धरती
गर्द	:	धूल
चिनगी	:	चिनगारी
सुघर	:	सुगठित
सीकर	:	पसीना
छिन्नतार	:	टूटी निरंतरता